अपने–अपने राम

पूर्णिमा श्रीनिवासन
वेल्स विश्वविद्यालय, चेन्नई
9884026296

सदा राम, सर्वत्र राम ।।
बच्चों की किलकारी में,
बांसुरी की मधुर ध्वनि में,
मानव की मानवता में,
दीन दुखियों की संपन्नता में,
सदा राम सर्वत्र राम ।।
वरिष्ठ के उपदेश में,
विजेता के आघोष में,
अथक परिश्रमी के आत्मविश्वास में, अपार आशावादी के श्वास में,
सदा राम, सर्वत्र राम ।।
सरिता की सरसरी में,
ऋतुओं की प्यारी हंसी में,
सलिल के रंजक शीत में,
समीर के मोहक आघात में,
सदा राम, सर्वत्र राम ।।
ऋणी रोगियों के आश्वासन में, कर्मयोगी के अनुशासन में,
भवसागर के सुख दुख में,
पाश–माया मोह के विमुख में,
सदा राम, सर्वत्र राम ।।
प्राणियों के प्रति सद्भावना में, दानियों की तरल भावना में,
विद्वानों की विशिष्ट रचना में,
पापियों की क्षमा याचना में,
सदा राम, सर्वत्र राम ।।
पति–पत्नी के पवित्र बंधन में,
परिवार रूपी सशक्त साधन में,
विश्व बंधुत्व के अनन्य स्पंदन में, अखंडित देश के प्रति वंदन में,
सदा राम, सर्वत्र राम ।।